P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-IX*May-2016

सरदार पटेल और नेहरू मतभेद

प्रताप बहादुर पटेल
अतिथि प्रवक्ता,
राजनीति विज्ञान विभाग,
श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजकीय महाविद्यालय,
फाफामऊ, इलाहाबाद

सारांश

सरदार पटेल और नेहरू के मध्य मतभेद अधिक ठोस थे और दिल्ली की राजनीतिक सरगर्मियों में लिप्त कुछ लोगों का कार्यकलाप यही था कि वे दोनों के मध्य मतभेद बढ़ाने का कोई भी मौका हाथ से निकलने नहीं देना चाहते थे। डॉ0 वी0के0केसकर ने नेहरू पटेल धुरी को प्रत्येक दृष्टि से एक आश्चर्यजनक संगठन बताया जो दो विरोधी तत्वों का सम्मिश्रण था, जो परस्पर एक दूसरे की क्षतिपूर्ति थे।[1] यद्यपि यह सही है कि दोनों के मध्य मतभेद रहे, वैचारिक असमानता रही, किन्तु देशभक्ति, आदर्शो के प्रति आस्था और नेतृत्व के प्रति अपनी निष्ठा के कारण दोनों ने ही अपने विचारों के इस अन्तर और असमानता को कायम रखते हुए भी आपस में टकराने की कोशिश नहीं की।[2] महात्मा गाँधी के प्राइवेट सेक्रेटरी प्यारे लाल ने दोनों के मध्य मतभेदों के संबंध में अपने 'महात्मा गाँधी' नामक ग्रंथ में लिखा है कि –''मतभेद मंत्रिमंडल में भी थे। सरदार पटेल तथा पं0 नेहरू में सदा ही इस प्रकार के मतभेद रहे, जिनका संबंध उनकी अपनी–अपनी निजी प्रकृति से था। विभिन्न प्रश्नों के संबंध में उनके दृष्टिकोण में अन्तर था। नेहरू जी के हृदय तथा उनके मस्तिष्क की अप्रितम विशेषताओं का सरदार के हृदय में बहुत अधिक मान था किन्तु उनको यह शिकायत रहती थी कि वह सदा ही अपने को बुरे परामर्शदाताओं से घिरा हुआ रखते थे और इसलिए उन पर पर्याप्त विश्वास नहीं रखते थे और इस प्रकार के कार्यो में लग जाया करते थे जिनमें उनकी सद्भिलाषायें लुप्त हो जाती थी। इसके विरूद्ध पं0 नेहरू सरदार पटेल की सर्तक बुद्धि, शासन संबंधी प्रतिभा तथा संघर्ष करने के अप्रितम गुणों के प्रशंसक थे और इसलिए वह उनके अतिरिक्त और किसी के आगे नहीं झुकते थे। नेहरू जी सरदार पटेल क विभिन्न प्रश्नों को हल करने की प्रणाली से असन्तुष्ट थे तथापि वे दोनों एक दूसरे को पूर्ण सहयोग देते थे।[3]

मुख्य शब्द : सरदार पटेल, पं0 नेहरू, मतभेद, विचार, संघर्ष।

प्रस्तावना

सरदार पटेल और पं0 नेहरू के बीच मतभेद

नेहरू और पटेल के दृष्टिकोणों का अन्तर समझने के लिए उन दोनों की विभिन्न परिस्थितियों का अध्ययन आवश्यक है जिसमें दोनों की विचारधारा की विचारधाराओं का विकास हुआ।

नेहरू का जन्म एक सम्पन्न एवं बुद्धिजीवी परिवार में हुआ। प्रारम्भ से ही इंग्लैण्ड में शिक्षा प्राप्त करने के कारण वे पाश्चात्य सभ्यता से प्रभावित थे। इसके अतिरिक्त उन्हें राजनीति के शीर्ष पर पहुँचने के लिए किसी प्रकार का संघर्ष नहीं करना पड़ा क्योंकि उनको राजनीति जीवन के प्रारम्भ से ही गाँधी जी सहित तमाम बडे नेताओं का सतत समर्थन मिलता रहा था।

इसके विपरीत सरदार पटेल का जन्म साधारण से किसान परिवार में हुआ था परिणामस्वरूप उन्हें बचपन से ही संघर्षो का सामना करना पड़ा। अतएव वे स्वभाव से कठोर हो गये और कठिन से कठिन समस्याओं को सुझलाने की उनमें क्षमता थी और उनकी इच्छाशक्ति लौहिक थी।

इस प्रकार इन दो विभिन्न वातावरणों में दोनों महापुरूषों के राजनीतिक विचारधारा का विकास दो विपरीत विचारधाराओं के रूप में हुआ। नेहरू प्रगतिशील विचारधारा के व्यक्ति माने जाते थे तो सरदार पटेल रूढ़िवादी विचारधारा का नेतृत्व करते थे। इन दोनों विपरीत स्वभाव की विभूतियों की एकता के सूत्र में बाँधने का कार्य महात्मा गाँधी ने किया। दोनों ही महात्मा गाँधी के भक्त थे। नेहंरू की उदारता, निष्कपट स्वभाव तथा उनके व्यक्तिगत चरित्र के कारण गाँधी जी उन्हें पुत्र के समान समझते थे तथा 1929 में सबसे कम आयु का कांग्रेस अध्यक्ष बनवाया तो दूसरी तरफ वह सरदार पटेल की कर्मठता एवं लगन से प्रभावित थे। 1931 के करांची अधिवेशन में गाँधी जी ने कहा था कि–

''जवाहर लाल विचारक है और सरदार पटेल कार्य करने वाले हैं।'' यद्यपि देश की आजादी की लड़ाई में दोनों के मध्य मतभेद सार्वजनिक नहीं हुए

किन्तु आजादी प्राप्ति के प्रारम्भिक वर्षो में ही दोनों के मध्य मतभेद सार्वजनिक रूप से उजागर होने लगे। उन दोनों के मध्य बढ़ते मतभेद से अपने अन्तिम दिनों में गाँधी भी चिन्तित रहत थे। गाँधी जी की मृत्यु के पूर्व मतभेद इतने उग्र हो गये थे कि दोनों ने त्यागपत्र देने की पेशकश की थी। पटेल और नेहरू के मध्य कुछ प्रमुख विवादित विषयों का वर्णन निम्न प्रकार से किया गया है।

नेहरू फेवियन समाजवाद एवं अन्तर्राष्ट्रीयता में विश्वास रखते थे जबकि सरदार पटेल ने अपने किसी निश्चितवाद से नहीं जोड़ा परन्तु अपने विचारों से वे पूँजीवाद को समाज के लिए आवश्यक मानते थे। अमेरिकन पत्रकार विसेंट शीन के अनुसार– ''सरदार पटेल की गाँधीवादी विचारधारा पूँजीवादी विकास के पक्ष में थी, जबकि नेहरू अपनी गाँधीवादी विचारधारा में सोसलिस्ट सिद्धान्तों को विकसित करना चाहत थे।''[4]

नेहरू और सरदार पटेल के मध्य जूनागढ़ और हैदराबाद रियासतों को भारत में विलय के प्रश्न को लेकर था। सरदार पटेल इन रियासतों को बहुत समझाया बुझाया पर जब ये नहीं माने तो उन्होंने राष्ट्रहित में तथा राष्ट्र की अखण्डता को सुनिश्चित करने हेतु बल प्रयोग का प्रस्ताव किया जिसका नेहरू ने विरोध किया। उनकी नजर में ऐसा करना साम्प्रदायिक कार्य होगा। इस प्रश्न को लेकर विवाद इतना बढ़ गया कि ''सरदार ने मंत्रिमंडल से त्याग पत्र देने का फैसला ले लिया था।''[5] अन्ततः बाध्य होकर भारी मन से नेहरू को सैनिक कार्यवाही के लिए सहमत होना पड़ा।

काश्मीर के प्रश्न पर भी दोनों नेताओं में मतभेद थे। काश्मीर सरदार पटेल के मंत्रालय के अधीन था लेकिन नेहरू ने इस समस्या को अपने हाथ में लेकर सरदार पटेल को इसके हक से वंचित कर दिया। नेहरू इसे अन्तर्राष्ट्रीय समस्या मानकर जनवरी, 1948ई0 को संयुक्त राष्ट्र संघ में ले गये जिसका पुरजोर विरोध सरदार पटेल ने किया। साथ ही सरदार पटेल जम्मू–काश्मीर राज्य में संवैधानिक रूप से कार्य करने वाली सरकार के पक्ष में थे, अतएव अब्दुल्ला को नेहरू द्वारा आवश्यकता से अधिक महत्व देने से संतुष्ट न थे। 8 जून, 1948 ई0 को नेहरू को लिखे पत्र में उन्होंने कहा कि–

''हमें महाराजा तथा शेख अब्दुल्ला के बीच मतभेदों की खाई को पाटने का प्रयास करना चाहिये।''[6]

राष्ट्रमंडल की सदस्यता के संबंध में सरदार पटेल सदैव वह सोचते थे कि व्यावहारिक कारणों से राष्ट्रमंडल का सदस्य बना रहना भारत के हित में होगा। दूसरी ओर कांग्रेस वर्षो से पूर्ण स्वराज्य के संकल्प से वचनबद्ध हो चुकी थी। जिसका अर्थ था राष्ट्रमंडल से संबंध विच्छेद। नेहरू का मत था कि राष्ट्रमंडल की सदस्यता का भारत के गणतंत्र से मेल नहीं बैठता। परन्तु सरदार के प्रबल समर्थन और यथार्थवादी परामर्श से नेहरू भी इसके समर्थक बन गये।

चीन के साथ मित्रता को सरदार पटेल शंका की दृष्टि से देखते थे। 1950 ई0 में चीन ने तिब्बत के कुछ भागों में प्रवेश किया तो 7 नवम्बर, 1950 ई0 को अपने एक लम्बे पत्र में सरदार पटेल ने नेहरू को चेन से गम्भीर खतरे की चेतावनी दी थी। ''उन्होनें सुझाव दिया कि प्रासंगिक विचारों के प्रकाश में हमारे प्रतिरक्षा मोर्चो तथा दीर्घकालीन व्यवस्थाओं पर पुनः सोचा जाना चाहिए।''[7]

धर्म निरपेक्षता को लेकर भी दोनों नेताओं में विवाद था। नेहरू की नजर में जिस कदम से मुसलमानों को कष्ट हो तथा अन्तर्राष्ट्रीय बदनामी के भाव प्रकट होते हों वह धर्म निरपेक्ष कदम नहीं है जबकि सरदार पटेल धर्म निरपेक्षता को राष्ट्रहित की दृष्टि से देखते हैं और कोई भी ऐसा कदम उठाने को धर्म निरपेक्षता के विरूद्ध नहीं मानते थे जिससे कि राष्ट्र का हित हो। साथ ही पटेल नेहरू की इस बात से भी नाराज रहते थे कि वे अनावश्यक रूप से मुसलमानों को आवश्यकता से अधिक महत्व देते थे।

नोआखाली दंगों म सरदार पटेल, नेहरू और गाँधी की भूमिका से असंतुष्ट थे। वे सिखों और हिन्दुओं की हत्या से बहुत आहत थे अतः नेहरू तथा गाँधी द्वारा मुसलमानों के लिए अनुचित कृपा को पसन्द नहीं करते थे। गाँधी जी की नोआखाली यात्रा को भी सरदार ने उचित नहीं माना। सरदार ने एक सार्वजनिक सभा में भाषण करते हुए कहा था कि–

''जब तक मुसलमान भारत के प्रति अपनी भक्ति की घोषणा स्पष्ट शब्दों में नहीं कर देते उनका विश्वास नहीं किया जा सकता।''

नेहरू गृह मंत्रालय और देशी राज्य मंत्रालय में सरदार के कार्यो में दखल देते थे और शिकायत करते थे कि उन्हें राज्य में होने वाली घटनाआ से अवगत नहीं कराया जाता। इस प्रकार की शिकायतों से सरदार को कष्ट होता था।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति के चयन को लेकर भी नेहरू और पटेल में मतभेद था। नेहरू राजगोपालाचारी को राष्ट्रपति बनाना चाहते थे। जबकि सरदार पटेल ने राजेन्द्र प्रसाद का प्रस्ताव रखा। इस पर नेहरू ने डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद को पत्र लिखकर कहा कि राष्ट्रपति पद के लिए राजगोपालाचारी योग्य उम्मीदार हैं अतः आपको चुनाव नहीं लड़ना चाहिए। इस पत्र की राजेन्द्र प्राद की तरफ से तीव्र प्रतिक्रिय हुई और जब नेहरू ने यह प्रश्न संविधान सभा के कांग्रेसी सदस्यों के बीच में उठाया तो उन्होंने राजेन्द्र प्रसाद का समर्थन किया। लेकिन सरदार ने उन्होंने समझाकर इस्तीफा न देने के लिए तैयार कर लिया।[8]

1950 के कांग्रेस अध्यक्ष के चुनाव को लेकर भी पटेल और नेहरू के मध्य मतभेद हुए।नेहरू पुरूषोत्तमदास टंडन को अध्यक्ष बनाये जाने के विरूद्ध थे जबकि सरदार पटेल ने उनका समर्थन किया। नेहरू ने कहा कि ''मेरा मन, इस बारे में बिल्कुल स्पष्ट है कि अंगर टंडन जी कांग्रेस अध्यक्ष चुने जाते हैं तो मुझे मानना चाहिए कि कांग्रेसीजन मुझमें विश्वास नहीं करते फलतः मैं कांग्रेस कार्यकारिणी में कार्य नहीं कर सकता यानी मैं प्रधानमंत्री नहीं रह सकता।''[9] अन्ततः पुरूषोत्तम दास टंडन बहुमत से कांग्रेस अध्यक्ष चन लिये गये।

उद्देश्य

सरदार पटेल और पं0 नेहरू के मध्य मतभेद की व्याख्या करना।

निष्कर्ष

यद्यपि नेहरू और पटेल के दृष्टिकोण में पर्याप्त असमानता थी, परन्तु दोनों ही राष्ट्ररूपी रथ के दो विभिन्न छोर थे। आधुनिक भारत के निर्माण में दोनों का सर्वांगीण योगदान है। एक ने राष्ट्रीय प्रगति की तो दूसरे ने उसे गति प्रदान की। दूसरे शब्दों में एक ने राष्ट्र रूपी इमारत की नींव भरी, तो दूसरे ने उसे खड़ा किया। सरदार की मृत्यु पर नेहरू ने उनके योगदान को स्वीकार करते हुए कहा कि –

''संकट और विजय के समय में हम उनकी मजबूत आवाज सुनते थे। वे ऐसे मित्र और सहयोगी थे, जिन पर पूरा भरोसा किया जा सकता था, वह ऐसे शक्ति स्तम्भ थे जिससे दुर्बल हृदय भी मजबूत हो जाते थे।''[10]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. केसकर, वी0के0, नेहरू और पटेल, पृ0 91
2. दास, सेठ गोविन्द,सरदार पटेल, दिल्ली,1988,पृ0 102
3. शास्त्री, आचार्य चन्द्रशखर, राष्ट्र निर्माता सरदार पटेल,नयी दिल्ली, 1968, पृ0 186
4. शास्त्री, आचार्य चन्द्रशखर, राष्ट्र निर्माता सरदार पटेल,नयी दिल्ली, 1968, पृ0 189
5. शास्त्री, आचार्य चन्द्रशेखर, राष्ट्र निर्माता सरदार पटेल, नयी दिल्ली, 1968, 198
6. मेहरोत्रा एवं कपूर, सरदार वल्लभ भाई पटेल व्यक्ति एवं विचार दिल्ली, 1997, पृ0 154
7. मेहरोत्रा एवं कपूर, सरदार वल्लभ भाई पटेल व्यक्ति एवं विचार दिल्ली, 1997, पृ0 199
8. शास्त्री, आचार्य चन्द्रशेखर, पूर्वो, पृ0 188
9. शंकर, बी0 सरदार पटेल चुना हुआ पत्र व्यवहार, खण्ड 2 अहमदाबाद, 1976, पृ0 523–24
10. मेहरोत्रा एवं कपूर, पूर्वो, पृ0 201